आ धरती कितना देती है – प्रतिपाद्य

सुमित्रा नंदन पंत की कविताओं को समझने के लिए उनकी काव्ययात्रा को समझना बहुत जरूरी है। प्रस्तुत कविता 'आ धरती कितना देती है' पंत जी की काव्ययात्रा के उत्तरकालीन भाग का एक अत्यंत सुंदर पड़ाव है। यह कविता 'वाणी' में संग्रहित है। दरअसल 'वाणी' पंत की छायावादी, अतिशय कल्पना-प्रियता और लाक्षणिक – वक्रता के विरुद्ध सहज – सरल भाषा में लिखी गई कविताओं का प्रतिनिधि संकलन है। ये कविताएं भाव एवं शिल्प दोनों ही स्तरों पर छायावादी कविताओं से विपरीत प्रकृति की हैं। इन कविताओं में कल्पना के प्राधान्य के स्थान पर अनुभूति की तीव्रता और गहराई है। शिल्प में भी ये छायावादी कविताओं से नितांत भिन्न हैं। भाषा सहज – सरल है, चित्रात्मकता के स्थान पर वर्णनात्मकता की प्रधानता है। इन कविताओं में छोटी – छोटी, जनजीवन से ली गईं साधारण से साधारण बात को पूर्णता और सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। इस कविता का केंद्रीय भाव यही है कि मनुष्य को धरती की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हम मनुष्यों ने इसी धरती पर जन्म लिया है और इसी धरती ने हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति की है।

कविता में कवि अतीत की ओर मुड़कर देखते हैं, अपने बचपन को याद करते हुए कहते हैं कि एक बार बचपन में सबसे छुपकर मैं ने कुछ पैसे बोए थे। उन्हें बोते हुए सोचा था कि पैसे के पेड़ उगेंगे और उनपर फल के रूप में सिक्के लगेंगे। ये सिक्के डाल के हल्के से हिलने पर भी खनकेंगे। कवि ने कलदार शब्द का प्रयोग किया है उन दिनों मुख्य रूप से चांदी के सिक्कों को कहा जाता था। कवि ने बचपन में यह कल्पना की थी कि हवा चलने पर सिक्कों की खनखनाहट से मधुर संगीत उत्पन्न होगा। इन रुपयों से मैं बहुत अमीर हो जाऊँगा, सारी सुख – सुविधाओं के साथ किसी अमीर सेठ की तरह रहूँगा। कुछ दिनों पश्चात बहुत आशा और उम्मीद लेकर कवि जब उस स्थान को देखने गए तो वहाँ एक भी अंकुर नहीं फूटा था, तब अपने बालमन में उन्होंने यह सोचा कि यह धरती ही उपजाऊ नहीं है। कवि ने अपने बचपन में यह सोचा ही नहीं कि कमी धरती में नहीं बोने वाली वस्तु में है, धरती में बीज से अंकुर फूटते हैं न कि सिक्कों से।

जब इस घटना को बीते हुए आधी शताब्दी हो गई है तब कवि उसे याद कर रहे हैं, इस बीच कितने ही पतझड़, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, हेमंत इत्यादि ऋतुओं का आवागमन हुआ। एक दिन कवि ने बारिश से भींगी गीली धरती में सेम के बीज गाड़ दिये, इस बार वे बीज अंकुरित हो गए। कवि ने उन अंकुरों की सुंदरता का बहुत अच्छा वर्णन किया है। उन अंकुरों का धीरे – धीरे झाड़ियों में परिवर्तित होना, उनमें फूल लगना। उन फूलों से फलियों का विकास होना।

कवि ने आगे कहा है कि उन बेलों में समय पर फलियां टूटने लगीं, उनकी संख्या गिनी नहीं जा सकती थी। वे अत्यंत प्यारी लगतीं थीं। वे डालियों पर चन्द्रमा की कला के समान नित्य – निरंतर बढ़नेवाली थीं। कवि ने सर्दी के मौसम में जी भर उनकी सब्जी बनाई, बंधु – बांधव, मित्र, अतिथि, भिक्षुक, आस – पड़ोस सबको बाँटा गया, फिर भी वे समाप्त नहीं हुईं। कवि सेम की फलियों का वर्णन करते करते विचार मग्न हो जाते हैं। उन्हें अनुभूति होती है कि यह धरती हमें क्या नहीं देती है। यह तो हमारी माता है। कवि आश्चर्य में हैं कि मैं अब तक धरती के महत्व को जान ही नहीं पाया था। सेम के बीज बोने के बाद ही मैं धरती की महानता को पहचान पाया हूँ। इस धरती में हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं, वह हमें एक दाने के बदले हजारों दाने देती है। हमें अपनी धरती में प्रेम, भाईचारे,

समानता और क्षमता के बीज ही धरती में बोने चाहिए ताकि सभी समान रूप से रहें, और सभी अपना और समाज का विकास कर सकें।